14. मिठाई वाला

भगवती प्रसाद वाजपेयी

लेखक परिचय –

भगवती प्रसाद वाजपेयी का जन्म कानपुर में सन् 1899 में हुआ। उनकी पहली कहानी 'यमुना' 1923 ई० में 'श्री शारदा' नाम की पत्रिका में प्रकाशित हुई। इससे पहले वे कविता के क्षेत्र में आ चुके थे। वाजपेयी कवि, नाटककार, उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में अपनी प्रभावी सृजन-कला का परिचय देते हैं। उनके प्रमुख उपन्यास हैं – त्यागमयी, पतवार, भूदान। 'छलना' और 'रायपिथौरा' उनके नाटक हैं। कविता संग्रह हैं – 'ओस की बूँदें'। इसके अतिरिक्त उन्होंने बालोपयोगी साहित्य का सृजन भी किया है एवं संपादन के क्षेत्र से भी जुड़े रहे हैं।

कहानीकार के रूप में वाजपेयी जी के प्रमुख संग्रह हैं – 'मधुपर्क', 'हिलोर', 'पुष्करिणी', 'दीपमालिका', 'उपहार', 'खाली बोतल', 'अंगारे', 'स्नेह' आदि। वाजपेयी जी की कहानियों में मध्यवर्गीय मानसिक ऊहापोह को विशेष महत्त्व मिला है। बदलते समाज और बदलते वातावरण एवं नए प्रश्नों और समस्याओं को वाजपेयी जी ने अधिक महत्त्व दिया है। उन्होंने कुछ कहानियाँ समाज की विकृत परंपराओं, रूढ़ियों, कुरीतियों आदि को लेकर लिखी हैं तो कुछ कहानियों में विभिन्न वर्गों के बीच की दूरी, कटुता, अविश्वास, घृणा का सटीक चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों में कहीं प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख सामाजिक यथार्थ के दर्शन होते हैं तो कहीं शरतचन्द्र की भावुकता और मार्मिकता मिलती है। वाजपेयी जी की कहानियाँ आकार की दृष्टि से प्रायः छोटी होती हैं परंतु उनमें व्यंजकता होती है। कथानक अल्प होते हुए भी कहानियाँ तीव्र घटनाक्रम से बाँधे रखती हैं। शीर्षक आकर्षक और व्यंजनात्मक होते हैं। भाषा की स्वाभाविकता और कहने का विशिष्ट ढंग वाजपेयी जी की कहानियों की निजी विशेषता है।

पाठ परिचय –

'मिठाईवाला' कहानी में लेखक ने बाल मनोविज्ञान के विविध कोणों को प्रस्तुत किया है। बाल सुलभ चपलता, आकर्षण, हठ, मन की विविध भंगिमाएँ इस कहानी में देखी जा सकती हैं। यह कहानी मानव-मन में छिपे वात्सल्य और उसके समर्पणभाव की जीती जागती कथा है। मानव अपने हृदय के अभाव को पूर्ण करने के लिए किस प्रकार स्वयं को विश्व से जोड़कर संतुष्टि प्राप्त कर सकता है इसका प्रकट उदाहरण यह कहानी है।

मूल पाठ –

1

बहुत ही मीठे स्वरों के साथ वह गलियों में घूमता हुआ कहता – ''बच्चों को बहलाने वाला, खिलौनेवाला।''

इस अधूरे वाक्य को वह ऐसे विचित्र, किंतु मादक-मधुर ढंग से गाकर कहता कि सुनने वाले एक बार अस्थिर हो उठते। उसके स्नेहाभिषिक्त कंठ से फूटा हुआ उपयुक्त गान सुनकर निकट के मकानों में

हलचल मच जाती। छोटे-छोटे बच्चों को अपनी गोद में लिए युवतियाँ चिकों को उठाकर छज्जों पर नीचे झाँकने लगतीं। गलियों और उनके अन्तर्व्यापी छोटे-छोटे उद्यानों में खेलते और इठलाते हुए बच्चों का झुंड उसे घेर लेता और तब वह खिलौनेवाला वहीं बैठकर खिलौने की पेटी खोल देता।

बच्चे खिलौने देख पुलकित हो उठते। वे पैसे लाकर खिलौने का मोल-भाव करने लगे। पूछते –''इछका दाम क्या है, औल इछका। औल इछका ? खिलौनेवाला बच्चों को देखता और उनकी नन्हीं-नन्हीं उँगलियों से पैसे ले लेता, और बच्चों की इच्छानुसार उन्हें खिलौने दे देता। खिलौने लेकर बच्चे फिर उछलने-कूदने लगते और तब फिर खिलौने वाला उसी प्रकार गाकर कहता –''बच्चों को बहलाने वाला, खिलौनेवाला।'' सागर की हिलोर की भाँति उसका यह मादक गान गली भर के मकानों में इस ओर से उस ओर तक, लहराता हुआ पहुँचा, और खिलौनेवाला आगे बढ़ जाता।

राय विजयबहादुर के बच्चे भी एक दिन खिलौने लेकर घर आए। वे दो बच्चे थे – चुन्नू और मुन्नू! चुन्नू जब खिलौने ले आया, तो बोला –''मेला घोला कैछा छुन्दल ऐ?''

मुन्नू बोला – ''औल देखो, मेला कैसा छुन्दल ऐ''

दोनों अपने हाथी-घोड़े लेकर घर भर में उछलने लगे। इन बच्चों की माँ रोहिणी कुछ देर तक खड़े-खड़े उनका खेल निरखती रही। अन्त में दोनों बच्चों को बुलाकर उसने पूछा –''अरे ओ चुन्नू-मुन्नू, ये खिलौने तुमने कितने में लिये हैं ?''

मुन्नू बोला – ''दो पैछे में। खिलौनेवाला दे गया ऐ।''

रोहिणी सोचने लगी–इतने सस्ते कैसे दे गया है। कैसे दे गया है, यह तो वही जाने। लेकिन दे तो गया ही है, इतना तो निश्चय है।

एक ज़रा सी बात ठहरी। रोहिणी अपने काम में लग गई। फिर कभी उसे इस पर विचार करने की आवश्यकता भी भला क्यों पड़ती।

2

छह महीने बाद।

नगर भर में दो-चार दिनों से एक मुरलीवाले के आने का समाचार फैल गया। लोग कहने लगे–''भाई वाह! मुरली बजाने में वह एक ही उस्ताद है। मुरली बजाकर, गाना सुनाकर वह मुरली बेचता भी है सो भी दो-दो पैसे। भला, इसमें उसे क्या मिलता होगा। मेहनत भी तो न आती होगी!''

एक व्यक्ति ने पूछ लिया –''कैसा है वह मुरलीवाला, मैंने तो उसे नहीं देखा!''

उत्तर मिला –''उम्र तो उसकी अभी अधिक न होगी, यही तीस-बत्तीस का होगा। दुबला–पतला गोरा युवक है, बीकानेरी रंगीन साफा बाँधता है।''

''वही तो नहीं, जो पहले खिलौने बेचा करता था ?''

''क्या वह पहले खिलौने भी बेचा करता था ?''

''हाँ जो आकार प्रकार तुमने बतलाया, उसी प्रकार का वह भी था।''

प्रतिदिन इसी प्रकार उस मुरलीवाले की चर्चा होती। प्रतिदिन नगर की प्रत्येक गली में उसका

मादक, मृदुल स्वर सुनाई पड़ता – ''बच्चों को बहलाने वाला, मुरलियावाला।''

रोहिणी ने भी मुरलीवाले का यह स्वर सुना। तुरंत ही उसे खिलौने वाले का स्मरण हो आया। उसने मन ही मन कहा –''खिलौनेवाला भी इसी तरह गा–गाकर खिलौने बेचा करता था।''

रोहिणी उठकर अपने पति विजय बाबू के पास गयी –''जरा उस मुरलीवाले को बुलाओ तो, चुन्नू-मुन्नू के लिए ले लूँ। क्या पता यह फिर इधर आये, न आए। वे भी, जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गए हैं।''

विजय बाबू एक समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। उसी तरह उसे लिए हुए वे दरवाजे पर आकर मुरलीवाले से बोले –''क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली ?''

किसी की टोपी गली में गिर पड़ी। किसी का जूता पार्क में ही छूट गया, और किसी की सोथनी (पाजामा) ही ढीली होकर लटक आई है। इस तरह दौड़ते-हाँफते हुए बच्चों का झुण्ड आ पहुँचा। एक स्वर से सब बोल उठे – ''अम बी लेंदे मुल्ली, और अम बी लेंदे मुल्ली।''

मुरलीवाला हर्ष-गद्‌गद हो उठा। बोला –''सबको देंगे भैया! लेकिन ज़रा रुको, ठहरो, एक-एक को देने दो। अभी इतनी जल्दी हम कहीं लौट थोड़े ही जाएँगे। बेचने तो आए ही हैं, और हैं भी इस समय मेरे पास एक-दो नहीं, पूरी सत्तावन। .....हाँ बाबूजी, क्या पूछा था आपने, कितने में दीं।.....दी तो वैसे तीन-तीन पैसे के हिसाब से है, पर आपको दो-दो पैसे में ही दे दूँगा।''

विजय बाबू भीतर-बाहर दोनों रूपों में मुस्करा दिए। मन ही मन कहने लगे–कैसा है। देता तो सबको इसी भाव से है, पर मुझ पर उलटा एहसान लाद रहा है। फिर बोले–''तुम लोगों की झूठ बोलने की आदत होती है। देते होंगे सभी को दो-दो पैसे में, पर एहसान का बोझा मेरे ही ऊपर लाद रहे हो।''

मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा। बोला–''आपको क्या पता बाबू जी कि इनकी असली लागत क्या है। यह तो ग्राहकों का दस्तूर होता है कि दुकानदार चाहे हानि उठाकर चीज क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं–दुकानदार मुझे लूट रहा है। आप भला काहे को विश्वास करेंगे? लेकिन सच पूछिए तो बाबूजी, असली दाम दो ही पैसा है। आप कहीं से दो पैसे में ये मुरलियाँ नहीं पा सकते। मैंने तो पूरी एक हजार बनवाई थीं, तब मुझे इस भाव पड़ी हैं।''

विजय बाबू बोले–''अच्छा, मुझे ज्यादा वक्त नहीं, जल्दी से दो ठो निकाल दो।''

दो मुरलियाँ लेकर विजय बाबू फिर मकान के भीतर पहुँच गए। मुरलीवाला देर तक उन बच्चों के झुंड में मुरलियाँ बेचता रहा। उसके पास कई रंग की मुरलियाँ थीं। बच्चे जो रंग पसंद करते, मुरलीवाला उसी रंग की मुरली निकाल देता।

''यह बड़ी मुरली है। तुम यही ले लो बाबू, राजा बाबू तुम्हारे लायक तो बस यह है। हाँ भैये, तुमको वही देंगे। ये लो।.....तुमको वैसी न चाहिए, यह नारंगी रंग की, अच्छा वही लो। .....ले आए पैसे ?अच्छा, ये लो तुम्हारे लिए मैंने पहले ही से यह निकाल रखी थी.....! तुमको पैसे नहीं मिले। तुमने अम्मा से ठीक तरह माँगे न होंगे। धोती पकड़कर पैरों में लिपटकर, अम्मा से पैसे माँगे जाते हैं बाबू! हाँ, फिर जाओ। अबकी बार मिल जाएँगे..... । दुअन्नी है ?तो क्या हुआ, ये लो पैसे वापस लो। ठीक हो गया न हिसाब ?.....मिल गए पैसे ?देखो, मैंने तरकीब बताई। अच्छा, अब तो किसी को नहीं लेना है ? सब ले चुके ? तुम्हारी माँ के पास पैसे

नहीं हैं ? अच्छा, तुम भी यह लो। अच्छा, तो अब मैं चलता हूँ।''

इस तरह मुरलीवाला फिर आगे बढ़ गया।

3

आज अपने मकान में बैठी हुई रोहिणी मुरलीवाले की सारी बातें सुनती रही। आज भी उसने अनुभव किया, बच्चों के साथ इतने प्यार से बातें करने वाला फेरीवाला पहले कभी नहीं आया। फिर वह सौदा भी कैसा सस्ता बेचता है। भला आदमी जान पड़ता है। समय की बात है, जो बेचारा इस तरह मारा-मारा फिरता है। पेट जो न कराये, सो थोड़ा।

इसी समय मुरलीवाले का क्षीण स्वर दूसरी निकट की गली से सुनाई पड़ा – ''बच्चों को बहलानेवाला, मुरलीवाला!''

रोहिणी इसे सुनकर मन ही मन कहने लगी– और स्वर कैसा मीठा है इसका!

बहुत दिनों तक रोहिणी को मुरलीवाले का वह मीठा स्वर और उसकी बच्चों के प्रति वे स्नेहसिक्त बातें याद आती रहीं। महीने आए और चले गए। फिर मुरलीवाला न आया। धीरे–धीरे उसकी स्मृति भी क्षीण हो गई।

4

आठ मास बाद –

सर्दी के दिन थे। रोहिणी स्नान करके मकान की छत पर चढ़कर आजानुलंबित केश-राशि सुखा रही थी। इसी समय नीचे की गली में सुनाई पड़ा – ''बच्चों को बहलानेवाला, मिठाईवाला।''

मिठाईवाले का स्वर उसके लिए परिचित था, झट से रोहिणी नीचे उतर आई। उस समय उसके पति मकान में नहीं थे। हाँ, उनकी वृद्धा दादी थीं। रोहिणी उनके निकट आकर बोली–''दादी, चुन्नू-मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। जरा कमरे में चलकर ठहराओ तो। मैं उधर कैसे जाऊँ, कोई आता न हो जरा हटकर मैं भी चिक की ओट में बैठी रहूँगी।''

दादी उठकर कमरे में आकर बोली–''ऐ मिठाईवाले, इधर आना।''

मिठाईवाला निकट आ गया। बोला –''कितनी मिठाई दूँ माँ ? ये नए तरह की मिठाइयाँ हैं -रंग-बिरंगी, कुछ-कुछ खट्टी, कुछ-कुछ मीठी, जायकेदार, बड़ी देर तक मुँह में टिकती हैं। जल्दी नहीं घुलती। बच्चे बड़े चाव से चूसते हैं। इन गुणों के सिवा ये खाँसी भी दूर कर सकती है! कितनी दूँ ? चपटी, गोल पहलदार गोलियाँ हैं। पैसे की सोलह देता हूँ।''

दादी बोली –''सोलह तो बहुत कम होती हैं, भला पचीस तो देते।'' मिठाईवाला –''नहीं दादी, अधिक नहीं दे सकता। इतना भी देता हूँ, यह अब मैं तुम्हें क्या..... । खैर, मैं अधिक न दे सकूँगा।''

रोहिणी दादी के पास ही थी। बोली –''दादी, फिर भी काफी सस्ता दे रहा है। चार पैसे की ले लो। यह पैसे रहे।

मिठाईवाला मिठाइयाँ गिनने लगा।

''तो चार की दे दो। अच्छा, पच्चीस नहीं सही, बीस ही दो। अरे हाँ, मैं बूढ़ी हुई मोल-भाव अब मुझे

ज्यादा करना आता भी नहीं।''

कहते हुए दादी के पोपले मुँह से जरा-सी मुस्कराहट भी फूट निकली।

रोहिणी ने दादी से कहा–''दादी, इससे पूछो, तुम इस शहर में और भी कभी आए थे या पहली बार आए हो ? यहाँ के निवासी तो तुम हो नहीं।''

दादी ने इस कथन को दोहराने की चेष्टा की ही थी कि मिठाईवाले ने उत्तर दिया –''पहली बार नहीं और भी कई बार आ चुका हूँ।''

रोहिणी चिक की आड़ ही से बोली –''पहले यही मिठाई बेचते हुए आए थे, या और कोई चीज लेकर ?''

मिठाई वाला हर्ष, संशय और विस्मयादि भावों में डूबकर बोला –''इससे पहले मुरली लेकर आया था, और उससे भी पहले खिलौने लेकर।''

रोहिणी का अनुमान ठीक निकला। अब तो वह उससे और भी कुछ बातें पूछने के लिए अस्थिर हो उठी। वह बोली –''इन व्यवसायों में भला तुम्हें क्या मिलता होगा ?

वह बोला –''मिलता भला क्या है! यही खाने भर को मिल जाता है। कभी नहीं भी मिलता है। पर हाँ, संतोष, धीरज और कभी-कभी असीम सुख जरूर मिलता है और यही मैं चाहता भी हूँ।''

''सो कैसे ?वह भी बताओ ?''

''अब व्यर्थ उन बातों की क्यों चर्चा करूँ ?उन्हें आप जाने ही दें। उन बातों को सुनकर आपको दुःख ही होगा।''

''जब इतना बताया है, तब और भी बता दो। मैं बहुत उत्सुक हूँ। तुम्हारा हर्जा न होगा। मिठाई मैं और भी कुछ ले लूँगी।''

अतिशय गंभीरता के साथ मिठाईवाले ने कहा –''मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान, व्यवसाय, गाड़ी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे-छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। बाहर संपत्ति का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था। स्त्री सुन्दरी थी, मेरी प्राण थीं। बच्चे ऐसे सुन्दर थे, जैसे सोने के सजीव खिलौने। उनकी अठखेलियों के मारे घर में कोलाहल मचा रहता था। समय की गति! विधाता की लीला। अब कोई नहीं है। दादी, प्राण निकाले नहीं निकले। इसलिए अपने उन बच्चों की खोज में निकला हूँ। वे सब अन्त में होंगे, तो यहीं कहीं। आखिर, कहीं न कहीं जन्में ही होंगे। उस तरह रहता, घुलघुल कर मरता। इस तरह सुख-संतोष के साथ मरूँगा। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक-सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है, जैसे वे इन्हीं में उछल-उछलकर हँस–खेल रहे हैं। पैसों की कमी थोड़े ही है, आपकी दया से पैसे तो काफी है। जो नहीं है, इस तरह उसी को पा जाता हूँ।

रोहिणी ने अब मिठाईवाले की ओर देखा– उसकी आँखें आँसुओं से तर हैं।

इस समय चुन्नू-मुन्नू आ गए। रोहिणी से लिपटकर, उसका आँचल पकड़ कर बोले –''अम्माँ, मिठाई!''

''मुझसे लो।'' यह कहकर तत्काल कागद की दो पुड़ियाँ, मिठाइयों से भरी, मिठाईवाले ने चुन्नू-मुन्नू को दे दीं।

रोहिणी ने भीतर से पैसे फेंक दिए।

मिठाईवाले ने पेटी उठाई, और कहा –''अब इस बार ये पैसे न लूँगा।''

दादी बोली – ''अरे-अरे, न न अपने पैसे लिए जा भाई!''

तब तक आगे फिर सुनाई पड़ा उसी प्रकार मादक-मृदुल स्वर में –''बच्चों को बहलाने वाला मिठाईवाला।''

•••

शब्दार्थ –

मादक–नशीले / मधुर–मीठे, सुनने में प्रिय / स्नेहाभिषिक्त कंठ–स्नेह में भीगा गला / मृदुल–कोमल / अप्रतिभ–उदास / अतिशय–अत्यधिक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा –

(क) अपने पर अविश्वास किए जाने के कारण।

(ख) वस्तुओं का अधिक मूल्य लेने के कारण।

(ग) विजय बाबू की कुटिल मुस्कान के कारण।

(घ) मुरली न बिकने की चिंता के कारण। ( )

2. मिठाईवाला गली-गली मिठाई बेचता फिरता था –

(क) पैसा कमाने के लिए

(ख) अपने बच्चों को खोजने के लिए

(ग) बच्चों को प्रसन्न करने के लिए

(घ) परिवार पालन करने के लिए ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मिठाईवाला कहानी के कहानीकार कौन हैं ?
2. मिठाईवाला कहानी में किन-किन रूपों में आया था ?
3. मुरलीवाला किस तरह का साफा बाँधता था ?
4. बच्चों से खिलौने की कीमत सुनकर रोहिणी ने क्या सोचा ?
5. मुरलीवाला कितने पैसे में मुरली बेचता था ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मिठाईवाला कहानी की मूल संवेदना क्या है ?

2. 'पेट जो न कराये सो थोड़ा है' इस कथन से मिठाईवाले का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है ?
3. मिठाईवाले ने अपनी मिठाइयों की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं ?
4. मिठाईवाला अपना सामान सस्ते में क्यों बेचता था ?
5. मुरलीवाले ने बच्चों को अपनी माँ से पैसे माँगने का क्या तरीका बताया ?

निबंधात्मक प्रश्न –

1. 'मिठाईवाला' कहानी बाल मनोविज्ञान के विविध कोणों को स्पष्ट करती है।' उक्त कथन की उदाहरण समीक्षा कीजिए।
2. अतिशय गंभीरता के साथ मिठाईवाले ने रोहिणी को अपनी क्या कहानी सुनाई ?
3. पाठ में आए निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) ''आपको क्या पता बाबूजी.....इस भाव पड़ी है।''

   (ख) ''उस तरह रहता.....उसी को पा जाता हूँ।''

•••